International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 45-46

कबीर के काव्य में धर्म और सामजिकता

डॉ0 आभा त्यागी

प्राचार्या वैष्य कन्या ममहाविद्यालय समालखा, पानीपत, हरियाणा, भारत।

सारांश
भारतीय संत साहित्य हमारी परम्परा की अनुपम और अद्भुत निधि है। इस साहित्य में तत्कालीन भारतीय समाज के अंर्तद्वन्द्वो का संपूर्ण इतिहास निहित है। ज्ञान को मानवीय संवेदना तथा भगवान मानने से अधिक तर्कमयता आज भी संभव नही है। भारतीय समूची सोच की यह धुरी है यही संवेदित ज्ञान जैन, बौद्ध सम्प्रदायो और ज्ञानाश्रयी संतो के चितंन की आधार भूमि रही है सन्त कवि कबीर के सारे आग्रह मनुष्य जीवन और जगत को संवारने के रहे है। उनकी सारी सोच और चिंताओं का केन्द्र जीव रहा है कबीर के पास कालजयी सोच के साथ मानवतावादी सिद्ध दृष्टि और समुद्र से गहरी संवेदना है। मानव मुक्ति के लिए विस्तीर्ण आकाष जैसा विष्वास है तो अस्तित्व रक्षा के लिए अगाध श्रदामयी शस्य श्यामला, अक्षय जीवन कोषमयी धरती धर्म–धर्म की परिभाषा समय और समाज के अनुसार बदलती जा रही है।

मूल शब्दः धर्म, सामजिकता

प्रस्तावना

धर्म की परिभाषा

महाभारत के अनुसार ''धर्म सबको धारण करता है जीवन की रक्षा करता है यह धर्म प्रजा के धारण मे संयुक्त है'' जिन सिद्वांन्तो का हमे, अपने दैनिक जीवन में और सामाजिक संबंधो मे पालन करना है वे उस वस्तु द्वारा नियत किये गये है जिसे धर्म कहा जाता है।
डा0 राधा कृष्णन अपने ''धर्म और समाज इस ग्रंथ मे धर्म की परिभाषा इस प्रकार करते है कि यह चारों वर्णो के और चारो आश्रमों के सदस्यों द्वारा जीवन के चार प्रयोजनो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के संबंध में पालन करने योग्य मनुष्य का समूचा कर्तव्य है।''

धर्म और कबीर

कबीर कालीन समाज में धार्मिक परिस्थिति विचित्र थी उस समय हिन्दु, इस्लाम, बौद्ध जैन नाथयोगी, शाक्त, शैव आदि प्रमुख धर्म मत–पंथ प्रचलित थे किन्तु लोगों के बीच अनेक ऐसे छोट–छोटे सम्प्रदायों का भी प्रचार हो चला था जिसके कारण बाहयाडम्बर एवं पाखंड का बोल बाला हो रहा था। ''कबीर मुसलमान होकर भी असल में मुसलमान नहीं थे, योगी होकर भी योगी नहीं थे। वे कुछ भगवान की ओर से ही सब से न्यारे बनाकर भेजे गये थे।'' कबीर ने बाहयाडम्बर धर्म का धिक्कार किया है।

''कबीर हिन्दू मुये राम कहि मुसलमान खुदाह।
कहै कबीर जो जीवता दुह मे कदे न आह''

कबीर की धर्म सम्बन्धी विचार धारा

कबीर स्वंय स्वतन्त्र विचार करने वाले थे। किसी भी एक धर्म का उनके मन पर बंधन न था वे लोककुल की मर्यादा को गले की फॉसी समझते थे। तत्कालीन समाज में जितने भी धर्म थे उन्होने प्रत्येक धर्म की बाहरी दिखावट का पर्दाफाष किया था। बाहयांडम्बर का खुले शब्दों में उपहास किया था धर्म की शाखा उपषाखाओं के अनुयायियों मे जो बाहयाचार दिखायी देता था उस पर वे टूट पडते थे उनके बाम मार्ग की अनावष्यकता स्पष्ट करके उन्हे समझाते थे परन्तु कबीर ने धर्म तत्व के मूल की ओर सबका ध्यान आकृष्ट करना चाहा तथा उसके आदेषानुसार आचरण करने का भी सबको उपदेष दिया वे धार्मिक आदर्षो का अनुसरण करने के पहले विवेक से काम लेने का भी अनुरोध करते थे और इसी दृष्टि से वे 'वेद कतेब' को भी झूठा मानते थे।
कबीर विभिन्न धर्मो और पतो से प्रभावित भी थे कर्मवाद और जन्मांतर में उनकी आस्था स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

''जल ही माहे जलि भुई, पूरब जनम लिषेणि''

कबीर का पक्का विष्वास था कि जिसके साथ भगवान है और जिसे अपने इष्ट पर अखंड विष्वास है उसकी साधना को करोड़ – करोड़ काल भी झकझोर कर विचलित नही कर सकते।

जाके मन विष्वास है, सदा गुरू है संग
कोटि काल झकझोर ही, तऊ न हो चित भंग।।

कबीर का समाज दर्षन

कबीर का आर्विभाव समाज व इतिहास के उस बिन्दु पर हुआ जहॉ सामंती समाज टूटने लगा था और पूंजीवादी समाज उभरने लगा था ''कबीर की वाणी की गूॅज गरीब की झोपड़ी से लेकर विष्वविद्यालयों के परिसर मे एक साथ सुनी जा सकती थी। कबीर की प्रतिभा जिस कुंठा और त्रास की षिला पर घिस –घिस कर पैनी हुई वह उनके युग के यथार्थ से उभरी थी कबीर का काव्य मात्र आक्रोष और विद्वेष का काव्य नहीं है कबीर जहॉ कही भी सामाजिक विकृतियों से उद्वेलित होते है सामंती समाज के ठेकेदार सामंतो–पंडितो मौलवियों को दुत्कारते फटकारते है।
''कबीर का समाज दर्षन अथवा आदर्ष समाज विषयक उनकी मान्यताऍ ठोस यथार्थ का आधार लेकर खडी है। अपने समय के सामंती समाज में जिस प्रकार का शोषण दमन और उत्पीड़न उन्होने देखा सुना था, उनके मूल में उन्हे सामंती यथार्थ एवं धार्मिक पाखंडवाद दिखाई दिया जिसकी पुष्टि दार्षनिक सिद्धान्तों की भ्रामक व्यवस्था से की जाती थी और जिसका व्यक्त रूप ब्राहयाचार एवं कर्मकांड थे।''
कबीर समानता को प्राधान्य देते थे विषमता के वे कटट्र विरोधी थे। जाति–पाति को वे नही मानते थे राजा और प्रजा को भगवान का मूल कहते थे। उनका कहना था ''हमारे और तुम्हारे भीतर एक ही रक्त का संचार हो रहा है एक से ही प्राण है और एक सा ही जीव और एक सा ही जीवन का मोह, चाहे नीचा हो और चाहे पवित्र हो सभी को मॉ के गर्भ में दस मास रहना ही पड़ता है। इस प्रकार सकल विष्व के एक ही प्रकृति जननी ने सृजित किया है हम

सब एक ही है फिर तुम किस ज्ञान से अलग–अलग हो रहे हो।''

'ऊँकार आदि है मूला, कौन ग्यान थै, भये निवारा।'

कबीर के युग में सामंती ढाँचा टूट रहा था जिस से जुड़ी सामंती संस्कृति में दरारें पड़ रही थी और लोक संस्कृति उभरने लगी थी इसी लोक संस्कृति के वाहर कबीर के जो निराषावादी पद्धति और अर्थहीन गतानुगतिका को त्याग कर जीवन के स्वस्थ उपभोग का संदेष देती है कबीर की सदाचार विषयक मान्यताएँ विवेकाश्रित व्यवहार सिद्ध एवं सामजोपयोगी है रूढ़िवादिता उनमें नही है परन्तु उनकी मान्यताएँ एवं आध्यात्मिक मानव को ही आदर्ष मानकर चली है।

''लोका मति के भौरा रे
जो कासी तन तजै कबीर तो रामहि कहा निहोरा रे''

कबीर की सामाजिकता ने उनके अध्यात्म को एक बिरल दृष्टि दी है और उनके अध्यात्म ने उन्हे सबसे बड़ी सामाजिक वस्तु दी निर्भयता। भय से मुक्ति और मनुष्य की स्वाधीनता एवं समानता के प्रति अविकल्प निष्ठा। कबीर की यह विषेषता उनकी कविता ने दी है जो उनके व्यक्तित्व में अत्यन्त प्रतिभ–दीप्त उर्जा में है इसी ने उन्हें अपने समाज की समझ और विषमता समाप्त करके उसे प्रेम के परिवेष में ढ़ालने की इच्छाषक्ति दी है।

कबीर के काव्य की मूलभूत चेतना समाज–संग्रह है वैयक्तिक मुक्ति का विधान नही कबीर की भक्ति समाजोन्मुखी है नर में नारायण की खोज करती है। कबीर मानव मात्र की समता, एकता एवं स्वतन्त्रता का उदधोष करते हैं और एक आदर्ष आध्यात्मिक मानव निर्माण के माध्यम से समता मूलक, शोषणरहित, हिंसा रहित एवं समरस समाज का स्वप्न देखते है। जिस आदर्ष समाज का सपना कबीर ने देखा था उसमें वर्णाश्रम पर आधारित भेदभाव निहित है ।

सन्दर्भ सूचीं

1. डा$_0$ राधा कृष्णन, धर्म और समाज पृष्ठ नं0 124 ।
2. महाभारत कालीन समाज – सुखमय भटटाचार्य पृष्ठ नं0 27 ।
3. शांति पर्व पृष्ठ नं0 109 ।
4. डा0 राधाकृष्णन –धर्म और समाज पृष्ठ नं0 124 ।
5. डा0 राधाकृष्णन –धर्म और समाज पृष्ठ नं0 127 ।
6. कबीर – डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ नं0 181 ।
7. कबीर ग्रन्थावली 129 पद 129 ।
8. कबीर साहित्य की परख, परषुराम चतुर्वेदी पृष्ठ 52 ।
9. कबीर ग्रन्थावली पृष्ठ नं0 34,साखी 22 ।
10. सत्य कबीर का साखी, वेंकटेषवर, वंवई सं0 1977 ।
11. जयदेव सिंह एवं डा0 वासुदेव सिंह सवद /299, सं0 ।
12. जयदेव सिंह एवं वासुदेव सिंह सवद /76–77 सं0 ।
13. कबीर ग्रन्थावली 244 पृष्ठ चौपदी रमैणी कबीर ग्रन्थावली पृष्ठ 98 पद 129 ।